E
Batch - 2020-21

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

एम्. ए. हिंदी (प्रथम वर्ष)

परीक्षा : मई – २०२२

सत्र – २

विषय : प्राचीन काव्य – (भाग–२) (HDS - 202)

दि.: २३/०५/२०२२ **कुल अंक : १००** **समय : प्रातः १०.०० से दो १.३०**

सूचनाएँ : १) किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

२) सभी प्रश्नों के लिए समान (२०) अंक हैं।

प्र. १ मीराँबाई के इष्टदेव, आराध्य भगवान कृष्ण के विविध रुपों का वर्णन, उनके काव्य में किस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है ?

प्र. २ मीराँबाई की भक्ति भावना का सोदाहरण विवेचन कीजिए ।

प्र. ३ मीराँबाई के काव्य की भाषा के विविध रुपों को सोदाहरण विशद कीजिए ।

प्र. ४ कवि बिहारी को रीति सिद्ध कवि या रीति कालीन प्रतिनिधि कवि क्यों कहा जाता है ?

प्र. ५ बिहारी के काव्य में चित्रित संयोग वर्णन का विवेचन कीजिए ।

प्र. ६ बिहारी के काव्य में चित्रित प्रकृति वर्णन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

प्र. ७ मराठी संतों की परंपरा में विविध धर्म संप्रदायों के योगदान को रेखांकित कीजिए ।

प्र. ८ संत नामदेवजी के जीवन परिचय को लिखते हुए, उनके पदों की सामान्य प्रवृत्तियो पर प्रकाश डालिए ।

प्र. ९ निम्नलिखित अवतरणों में से किन्ही दो की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए ।

१) णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ,प्रीत पुरातन जाच्याँ री ।
स्याम प्रीत री बाँधि घुंघरजाँ मोहन म्हारो साँच्या री ।।

२) तंत्रीनाद, कवित्त रस, सरस राग, रति रंग ।
अनबूडे तिरे, जे बूडे सब अंग ।।

३) ई भै बीठलु, ऊभै बीठलु बिन संसारु नही
थान थनंतरि नामा प्रणव पूरि रहिउ तू सरब मही ।।

४) लिखन बैठी जाकी सबी, गहि गहि गरब गुरुर,
भए न केते जगत् के, चतुर चितेरे कूर ।

प्र.१० निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए।

१) मीराँबाई के काव्य में विरह
२) बिहारी के काव्य में नायिका वर्णन
३) बिहारी के नीति एवं उपदेश के दोहे
४) मराठी संतों की हिंदी रचनाओंका स्वरुप